शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत की आर्थिक योजनाओं में मानव संसाधन विकास के प्रयास

डॉ. अरविन्द शाह वरकड़े
सहायक प्राध्यापक (अतिथि विद्वान)
अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय महाविद्यालय,
मंडला, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

किसी भी देश के सर्वांगीण विकास में मनुष्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। वर्तमान में मनुष्यों को संसाधन के रूप में परिभाषित किया गया है। देशों की योजनाएं इसी को ध्यान में रख कर बनायी जा रही हैं। आजादी के बाद भारत ने पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से सामाजिक, आर्थिक विकास के लक्ष्य निर्धारित किये। भारत ने अत्यल्प समय में मानव संसाधन के विकास में उल्लेखनीय प्रगति की है। प्रस्तुत शोध पत्र में इसी पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

पिछले 3 दशकों में दुनिया में बड़े राजनीतिक, सामयिक और आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। इन परिवर्तनों से यह साबित होता है कि कोई भी देश अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिये खुद को अलग-थलग नहीं रख सकता। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। विश्वव्यापीकरण की प्रक्रिया ने विकास के भविष्य को लेकर नई बहस छेड़ दी है। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा आयोजित किये जाने वाले सम्मेलनों के बड़े मंच से लेकर वर्तमान में भारत का गणतंत्र निर्धारित करने वाले चुनावों में भी विकास के वैकल्पिक अर्थ खोजे जाने लगे हैं। जो उन अर्थों से अलग है जो अब तक लगाये जा रहे हैं। इससे पहले विकास के बारे में जो भी अनुमान लगाये गये वह सिर्फ आर्थिक विकास को केन्द्र मानकर लगाये गये थे जो पंचवर्षीय योजनाओं के रूप में हमारे सामने आते रहे हैं। परन्तु अनुभवों से पता चलता है कि आमदानी और सकल घरेलू उत्पाद में बढोत्तरी विकास का पैमाना नहीं माना जा सकता। अंततः विकास का साध्य और साधन दोनों मनुष्य ही हैं। इसलिए मानव संसाधन, विकास संबंधी समस्त गतिविधियों का मूल है।

मानवीय संसाधन आर्थिक विकास का प्रमुख निर्धारक तत्व है और यह किसी भी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास से संचालित होता है। दोनों ही एक दूसरे के घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं, क्योंकि "प्राकृतिक साधन विकास का स्वरूप निश्चित करते हैं तथा चुनौती प्रदान करते हैं, जो मानव द्वारा स्वीकार अथवा अस्वीकार की जाती है।" अतः मानव संसाधन किसी भी राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बिन्दु है। मानव संसाधन एक बहुआयामी शीर्षक है। यह आर्थिक और अर्थव्यवस्था संबंधी गतिविधियों तक सीमित नहीं है बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य और आवास जैसे क्षेत्रों में मौजूद है। विकास से इसका संबंध है। आर्थिक विकास की प्रतिक्रिया मानवीय तत्व के अभाव में संचालित नहीं की जा सकती है। भारत जैसे

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

विकासशील देशों में जनसंख्या का आधिक्य तो होता है परन्तु उसके द्वारा संसाधनों के रूप में उसकी उपयोगिता उस सीमा तक प्रयोग नहीं लायी जाती जितनी कि विकासित देशों में लाई जाती है। भारत में मानव संसाधन विकास को अधिकतर सामाजिक विकास से जोड़कर देखा जाता है और जीवन की गुणवत्ता संबंधी मुद्दे भी शामिल कर लिए जाते हैं परन्तु यह एक आर्थिक विषय भी है क्योंकि किसी भी देश के लिए उसकी जनसंख्या उसके आर्थिक विकास का साधन और साध्य दोनों होती है। समस्त उत्पादन का मूल्य साधन मनुष्य ही है। वही अपनी शारीरिक और बौद्धिक शक्ति तथा भौतिक साधनों का प्रयोग करके नई रीतियों और प्रक्रियाओं की खोज करके उत्पादन की प्रक्रिया को जन्म देता है और आर्थिक विकास के लिय मार्ग प्रशस्त करता है। सभी साधनों को जुटाकर उन्हें समन्वित करता है और सेवा तथा वस्तुओं में परिवर्तित करके राष्ट्रीय धन के अधिकाधिक उत्पादन में सहायक बनाता है। यदि देश के प्राकृतिक साधन अत्यंत ही पर्याप्त् हों तो भी वह देश गरीब नहीं रह सकता यदि उसके जनसमूह पर्याप्त एवं कार्यकुशल हों।

मानव संसाधन विकास

"मानव संसाधन" से आशय किसी देश की जनसंख्या और उसकी शिक्षा, कुशलता, दूरदर्शिता तथा उत्पादकता से होता है। परन्तु जब हम मानवीय संसाधन को विकास से जोड़ते हैं तो इसका अभिप्राय उपरोक्त सभी विषयों के विकास और उसकी आर्थिक व सामाजिक उन्नति से होता है अर्थात् किसी देश की मानवीय शक्ति का अनुमान हम केवल वहां की जनसंख्या विकास के आधार पर नहीं लगा सकते। मानवीय संसाधन किसी भी देश के लिए राष्ट्र की पूंजी माने जाते हैं और किसी भी देश के लिए उसकी जनसंख्या उसके आर्थिक विकास का साधन और साध्य दोनों होते हैं।

प्रो. एडम स्मिथ के अनुसार- "प्रत्येक राष्ट्र में मानवीय श्रम/संसाधन वह कोश है जो, जीवन की आवश्यकताओं व सुविधाओं की पूर्ति करता है।" इसका अर्थ यह है कि किसी देश की आवश्यकताओं व सुविधाओं को मानवीय संसाधन द्वारा ही पूरा किया जा सकता है।

मानव संसाधन (कार्यकारी जनसंख्या)

1.मानव संसाधन और उत्पादन - एडम स्मिथ के विचार में, "वस्तुतः मनुष्य के प्रयत्न तथा योग्यता ही अंततः सभी आर्थिक वस्तुओं का स्रोत हैं।" किसी राष्ट्र में उपलब्ध प्राकृतिक साधनों के समुचित पोषण के लिए मानव संसाधन का आदर्श अनुपात आवश्यक होता है। यदि उत्पादन की अपेक्षा मानव संसाधन में तीव्रता से वृद्धि होती जाती है तो उत्पादन वृद्धि के अच्छे प्रभाव निष्फल हो जाते हैं क्योंकि ऐसी अवस्था में प्रति व्यक्ति उत्पादन तथा आय में वृद्धि के स्थान में कमी होती जाती है। अधिकांश अल्प विकसित राष्ट्रों में प्राकृतिक साधनों के बहुमूल्य के बावजूद पूंजी, तकनीकी, ज्ञान प्राविधि तथा कुशल उद्यमकर्ताओं व श्रमिकों की कमी के कारण इन साधनों का उचित शोधन नहीं हो पाता है। परिणामतः ये राष्ट्र अपनी जनसंख्या की आवश्यकताओं के अनुरूप उत्पादन नहीं कर पाते हैं। दस के विपरीत, विकसित राष्ट्रों में एक ओर तो मानव संसाधन वृद्धि की जाती है जिस कारण इन इन राष्ट्रों में राश्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति उत्पादन व आय में निरंतर वृद्धि होती जाती है। तीव्र आर्थिक विकास के लिए यह आवश्यक है कि मानव संसाधन वृद्धि को उत्पादन की मात्रा से समायोजित किया जाए।

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

2.जनसंख्या वृद्धि तथा रोजगार - कार्यकारी जनसंख्या से ही श्रम की पूर्ति होती है। श्रम की मांग एवं पूर्ति पर रोजगार का स्तर निर्धारित किया जाता है। इससे रोजगार तथा जनसंख्या में सीधा संबंध है, जो एक-दूसरे को प्रत्यक्ष रूप में प्रभावित करते हैं। रोजगार के लिये जनसंख्या की वृद्धि उचित है अथवा अनुचित, इस संबंध में भी दो परस्पर विरोधी विचार मिलते हैं। वे ये हैं- कुछ विद्वानों का मत है कि यदि उत्पादन के अन्य उपादानों में वृद्धि होती रही है, देश में प्रभावपूर्ण मांग विद्यमान है, प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन करने के लिए औद्यागिकी का विकास हो चुका है, देश में अतिरिक्त रोजगार के अवसर विद्यमान हैं, तब जनसंख्या की वृद्धि रोजगार की स्थिति का उदय होता है। परन्तु इसके विपरीत, कुछ विद्वानों ने रोजगार की स्थिति को केवल काल्पनिक बताया है। उनके अनुसार, जनसंख्या की वृद्धि से देश की अर्थव्यवस्था में निम्न दोष उत्पन्न होते हैं - बेरोजगारी की स्थिति, अदृश्य बेरोजगारी, अर्द्ध बेरोजगारी तथा खुली बेरोजगारी आदि। रोजगारों के अवसरों की कमी से देश में उक्त दोष विद्यमान होते हैं, जिससे राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि भी निरर्थक होती है। इसलिए अर्द्ध-विकसित राष्ट्रों में आज भी बेरोजगारी का साम्राज्य है। यद्यपि यह सत्य है कि जनसंख्या वृद्धि से श्रम की पूर्ति में वृद्धि होती है तथापि यह पूंजी निर्माण की गति पर आधारित होती है। संक्षेप में जनसंख्या वृद्धि तथा रोजगार की स्थिति निम्नांकित तथ्यों पर निर्भर होती है।

3.जनसंख्या तथा पूंजी निर्माण - जनसंख्या की वृद्धि दर तथा पूंजी निर्माण में घनिष्ठ संबंध है। तीव्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या पूंजी निर्माण पर अत्यंत प्रतिकूल प्रभाव डालती है। जनसंख्या की अधिकता होने पर राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय कम होती है। आय कम होने पर बचत भी कम होती है जिस कारण यथेष्ट मात्रा में पूंजी निर्माण नहीं हो पाता। अधिकांश अल्प-विकसित राष्ट्रों में जनशक्ति का बाहुल्य किन्तु पूंजीगत साधनों का अभाव होता है। आर्थिक विकास हेतु इन्हें आंतरिक साधनों से पर्याप्त पूंजी प्राप्त नहीं हो पाती जिस कारण इन्हें बाध्य होकर स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की अध्ययन समिति के अनुसार, किसी राष्ट्र में जनसंख्या की वार्षिक वृद्धि-दर 1 होने पर राष्ट्र में प्रचलित जीवन-स्तर को बनाये रखने के लिये राष्ट्रीय आय के 2 से 5 प्रतिशत भाग को बचाना होगा। किन्तु अल्प-विकसित राष्ट्रों में जनसंख्या की वृद्धि दर सामान्यतः 25 प्रतिशत है। ऐसी अवस्था में इन देशों से आय का 5 से 12.5 प्रतिशत भाग जनांकिकीय निवेश (क्मउवहतंचीपबंस प्दअमेजउमदज) में ही खप जायेगा। इस प्रकार विकासशील राष्ट्रों में तीव्रता से बढ़ती हुई जनसंख्या पूंजी निर्माण के मार्ग में अनेक बाधायें उपस्थित करती हैं।

4.जनसंख्या एवं निर्भरता भार - अर्द्ध विकसित राष्ट्रों में कार्य करने वाले व्यक्तियों का अनुपात निरन्तर घट रहा है और अनुत्पादक व्यक्तियों का भार बढ़ रहा है। इससे व्यय में वृद्धि होती है और बचत की मात्रा कम होती जाती है। बचत कम होने से पर्याप्त मात्रा में पूंजी निर्माण नहीं हो पाता और देश के उद्योगों के विकास पर बुरा प्रभाव पड़ता है। प्रायः अनुमान लगाया गया है कि प्रत्येक 8 व्यक्तियों के पीछे 5 व्यक्ति आश्रित या अनुत्पादक हैं जिनमें 8 व्यक्तियों की आय से 14 व्यक्तियों को खद्यान्न की पूर्ति करनी पड़ती है। सबको उचित व पर्याप्त मात्रा में खाद्यान्न की प्राप्ति नहीं होती और कार्यक्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है। भारत जैसे अर्द्ध-विकसित राष्ट्रों

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

में यह विशेषता रही है कि कार्यशील जनसंख्या का एक बड़ा भाग बेरोजगार रहता है जिसके निर्भरता भार में और वृद्धि हो जाती है।

5.जनसंख्या एवं तकनीकी - देश की जनसंख्या पर तकनीकी का गहरा प्रभाव पड़ता है। यदि देश की जनसंख्या शिक्षित एवं महत्वकांक्षी है तो वह नवीन तकनीक को सरलता से खोज सकती है। इसके विपरीत, अशिक्षित एवं उदासीन जनसंख्या पिछड़ी हुई तकनीक को अपनाये रहती है। यही कारण है कि गांवों की अपेक्षा शहरों में ही पहले उन्नत तकनीक को अपनाया जाता है। यदि देश की जनसंख्या अधिक है और श्रम-प्रधान विधि को अपनाया गया तो उससे बेरोजगारी की समस्या का निवारण संभव नहीं हो सकेगा। इसके विपरीत यदि किसी राष्ट्र में पूंजी-प्रधान तकनीक को अपनाया जाता है तो वह उसी राष्ट्र में लाभकारी एवं सरल रहेगा, जहां जनसंख्या वृद्धि की दर कम है तथा घनत्व भी कम है। कम जनसंख्या वाले राष्ट्रों में पूंजी-प्रधान विधि को अपनाना हानिप्रद भी नहीं रहेगा।

6.जनसंख्या व सामाजिक प्रभाव - जनसंख्या में वृद्धि होने से बेरोजगारी बढ़ती है तथा साथ ही साथ अनेक प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या के लिये अनेक स्कूल, अस्पताल, डाकघर मोटरें व परिवहन के साधनों में वृद्धि करती पड़ती है। शहरों में जनसंख्या का जमघट हो जाता है, जहां आवास की समस्या, सफाई व स्वस्थ वातावरण आदि की समस्यायें सामने आती हैं, जिनको सुलझाने से सरकार को अपनी आय का काफी भाग व्यय करना पड़ता है फिर भी भौतिक सम्पत्ति में कोई वृद्धि नहीं होती, क्योंकि भवन निर्माण, अस्पताल, शिक्षा एवं स्वास्थ्य आदि पर किये गये व्ययों से उत्पादन पर प्रत्यक्ष रूप से कोई प्रभाव नहीं पड़ता और उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पाती। अतः अर्द्ध-विकसित राष्ट्रों में पूंजी का काफी बड़ा भाग इस सामाजिक सेवाओं पर व्यय किया जाता है, जो यदि उत्पादन कार्यों में व्यय होता तो उत्पादन में वृद्धि अवश्य होती। मानव का यह स्वभाव है कि वह एक निर्धारित जनसंख्या घनत्व से अधिक के भार को सहन करने में असमर्थ रहता है। इससे उनकी कार्यक्षमता पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

पंचवर्षीय योजनाओं में मानव संसाधन विकास की अवधारणा में बदलाव

भारत में नियोजित आर्थिक विकास की प्रक्रिया अप्रैल 1951 में पहली पंचवर्षीय योजना में लागू होने के साथ प्रारंभ हुई। भारत में पहली पंचवर्षीय योजना तक नियोजन के जो लक्ष्य अपनाए गए, इन्हें चार समूहों में रखा जा सकता हैः विकास, आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भरता और सामाजिक नियोजन जिसके अंतर्गत सामाजिक न्याय मानव संसाधन विकास षैक्षणिक विकास, गरीबी उन्मूलन महिलाओं का उत्थान आदि आते हैं। भारतीय योजना का पहला चरण (51-67) अनिवेषिका अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन का दौर था। इस योजना में कृषि और बिजली, परिवहन और बुनियादी सेवाओं को उच्च प्राथमिकता प्रदान की गयी थी लेकिन इसमें स्वाभाविक रूप से सामाजिक सेवाओं पर ध्यान दिया जा सका। मानव संसाधन विकास के क्षेत्र में इस योजना में स्वास्थ्य, शिक्षा और कार्यक्रमों खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों के लिए इस तरह के कार्यक्रमों के जरिए इसकी व्यवस्था की गयी। कुल योजना खर्च (340 करोड़ रू.) को 16.4 प्रतिशत सामाजिक सेवाओं के लिए आबंटित किया गया जिसमें से 152 करोड़ रुपये. शिक्षा के लिए, 100 करोड़ रू. चिकित्सा के लिए और सार्वजनिक सेवाओं के

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अक्टूबर 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

लिए, 49 करोड़ रू. आवास के लिए, 29 करोड़ रू. पिछड़े वर्गों के लिए और केवल 7 करोड़ रू. श्रम और श्रमिक कल्याण के लिए रखे गए।

दूसरी पंचवर्षीय योजना को पहली योजना के ही विस्तार के रूप में देखा गया और इसमें ग्रामीण विकास पर जोर दिया गया। योजना का उद्देश्य रोजगारों के अवसरों को बढ़ा कर मानव संसाधन विकास पर ध्यान देना था। जिसमें शिक्षा के महत्व को समझा गया और सामाजिक सेवाओं के कुल खर्च में से करीब 20 प्रतिशत शिक्षा के लिए ताकि श्रम शक्ति का विशेष रूप से विकास किया जा सके। इसके लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों और प्रशिक्षित व्यक्तियों को रोजगार उपलब्ध कराने पर जोर दिया गया। स्वास्थ्य, आवास और समाज कल्याण तथा पिछड़े वर्गों के कल्याण पर कुल योजना खर्च के क्रमशः 6.4 प्रतिशत, 5.7 प्रतिशत, 0.6 प्रतिशत और 1.9 प्रतिशत के बराबर राशि खर्च की गयी।

तीसरी योजना की विकास संबंधी रणनीति में सुनिश्चित लक्ष्यों वाले सामाजिक कार्यक्रमों और जनसंख्या वृद्धि पर रोक लगाने के महत्व को पहचाना गया। इनका प्रमुख उद्देश्य अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाना था। कुल योजना खर्च का 16 प्रतिशत सामाजिक सेवाओं पर खर्च किया गया था लेकिन सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें देशभर में 6 से 11 वर्ष तक के सभी बच्चों को मुफ्त व अनवार्य शिक्षा उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया था जिसमें इंजीनियर और तकनीकी कालेजों की संख्या बढ़ाने का लक्ष्य रखा गया था।

चौथी योजना में अपनायी गयी सूत्र नीति में सामाजिक न्याय और समानता पर जोर दिया गया। इसमें शिक्षा में सुधार, विज्ञान शिक्षा का विस्तार और सुधार, अनुसंधान के स्तर में सुधार, आवास और जल आपूर्ति के लिए इस योजना में दीर्घावधि योजना बनाने परिवार और बाल कल्याण तथा शारीरिक रूप से विकलांगों से जुड़े समाज कल्याण कार्यक्रमों, पौष्टिक आहार, स्वैच्छिक संगठनों को सुदृढ़ करने और पुनर्वास की दिशा में पहल हुई।

पांचवी योजना में पहली बार न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम लागू किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण पर जोर दिया गया। इसके अलावा अनौपचारिक और तकनीकी शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए भी कदम उटाये गये। योजना में पिछड़े वर्गों के लिए विभिन्न योजनाओं का प्रावधान किया गया। समन्वित बाल विकास सेवा और विकलांगों के लिए छात्रवृति जैसे कई कार्यक्रम प्रारंभ किए गए।

छटवीं योजना में पहली बार ''मानव संसाधन विकास'' शब्द का उपयोग किया गया। इससे पहले की योजनाओं में शिक्षा, स्वास्थ्य, श्रम कल्याण, सामाजिक कल्याण, आवास व जल आपूर्ति के कार्यक्रमों के रूप में मानव संसाधन के तत्व मौजूद रहते थे। इस योजना में मानव संसाधन विकास के अन्य घटक जैसे पर्यावरण, पौष्टिक आहार, झोपड़-पट्टी इलाके के विकास आदि से संबंधित कार्यक्रम भी प्रारंभ किए गए। योजना में यह बात महसूस की गयी कि शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलती रहने वाली एक प्रक्रिया के रूप में मान्यता देते हुये इसे हर आयु वर्ग के लोगों के मानव संसाधन विकास के लिए आवश्यक माना गया और इस बात को भी माना गया कि स्वास्थ्य पर किया गया निवेश मनुष्यों और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने पर किया गया निवेश है।

सातवीं योजना के विकास में मनुष्यों के महत्व पर जोर दिया गया और मानव संसाधन विकास के लिये योजना में खर्च बढ़ाया गया। योजना में आत्म सम्मान, आत्मनिर्भरता और गरिमामय जीवन के संदर्भ में विकास को आसान बनाने का प्रयास किया गया। योजना की नीतियों और परिकल्पना में मानव संसाधन विकास को व्यापक अर्थ में प्राथमिकता दी गयी और कार्यक्रमों को निम्न शीर्षकों में दिया गया -

1.ग्रामीण विकास और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम

2.रोजगार संवर्धन कार्यक्रम

3.शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम

4.स्वास्थ्य संबंधी सेवाएं

5.महिलाओं और अन्य लक्षित समूहों के लिए कार्यक्रम

6.न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम जिसके अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य, जल आपूर्ति, पौष्टिक आहार, सड़क, आवास और विद्युतीकरण जैसी बुनीयादी सेवाएं शामिल हैं।

इस तरह सातवीं योजना में पिछली योजनाओं की अपेक्षा मानव संसाधन विकास का दायरा बढ़ाया गया और कला, संस्कृति, खेलकूद और युवाओं से संबंधित सेवाओं तथा सामाजिक विकास के साथ-साथ परिवार कल्याण और नियोजन को भी जोड़ा गया। योजना में मानव संसाधन विकास कार्यक्रमों को अन्य कार्यक्रमों से जोड़ने पर भी जोर दिया गया और शिक्षा को स्कूली पढ़ाई के सीमित दायरे से निकालकर स्वास्थ, पौष्टिक आहार, रोजगार, विज्ञान और टेक्नालोजी, समानता और कमजोर वर्गों की ओर विशेष ध्यान, शिक्षा को बेहतर परिप्रेक्ष्य में रखा गया। शिक्षा को जनता के विकास और तमाम क्षेत्रों में लोगों के विकास और अवसरों तथा सुविधाओं तक पहुंच का माध्यम बनाया गया।

आठवीं योजना में मानवीय पूंजी के विकास में मदद लेने वाले बुनियादी तत्वों को उपलब्ध कराना सरकार की मुख्य जिम्मेदारी थी। इस योजना में देश के सभी राज्यों में 15 से 35 वर्ष तक के सभी लोगों में शत प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य भी निर्धारित किया गया। जनजातीय बच्चों की शिक्षा के लिये विशेष कार्यक्रम लागू किये गये। इनमें मूल्यों पर आधारित शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा के विस्तार तथा तकनीकी व प्रबंधन शिक्षा पर जोर दिया गया।

नवीं योजना में अन्य बातों के अलावा पर्यावरण की सुरक्षा और महिलाओं के सशक्तिकरण पर जोर देने के साथ-साथ सामाजिक रूप से उपेक्षित वर्गों जैसे अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और अन्य पिछड़े वर्गों तथा अल्प संख्यकों को भी सामाजिक आर्थिक परिवर्तन और विकास का कारक माना गया।

दसवीं योजना के दृष्टिकोण पत्र में इसे जनता की योजना बताया गया है। जिसमें सभी लाभार्थियों को विकास प्रक्रिया में भागीदारी बनने के लिए प्रेरित किया गया है। इसमें देश के व्यापक प्राकृतिक, मानवीय और वित्तीय साधनों का पूरा-पूरा उपयोग करते हुये टिकाऊ विकास सुनिष्चित करने की बात कही गयी। पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने (क) श्रम सुधार और (ख) जनसंख्या नियंत्रण को जनांदोलन बताकर आबादी की बढ़ोत्तरी पर रोक लगाने की आवश्यकता पर जोर दिया। श्रम सुधारों से बड़ी संख्या में रोजगार के नये अवसर पैदा करने में मदद मिलेगी। उन्होंने देश में भरपूर मात्रा में उपलब्ध मानवीय संसाधनों के विकास में निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की भागीदारी के विस्तार और सघनता बढ़ाने की आवश्यकता पर जोर दिया है। इस तरह की भागीदारी शिक्षा, स्वास्थ्य

ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2015

की देखभाल और और स्वच्छता जैसे क्षेत्रों में जरूरी हो गयी है।

इस तरह उपर्युक्त विवरण के अध्ययन से हम ज्ञात कर सकते हैं कि भारत की विभिन्न योजनाओं में किस तरह से मानव संसाधन विकास की धारणा में बदलाव आया है।

संदर्भ ग्रंथ

1 Indian Economic Series (2003) P-9
2 Arther Lewis. The Theory of Economic Growth P-197
3 Harvey Levenstien : Economic Backwardness & Economic Growth P.P -145
4 Mathasian : Theory of PoPulation (1803)
5 Sharma & Vashney : Economic Growth & Planning
6 Dr. Bharti Pandey (1989) : Indian Economics P.P – 99
7 S. A. Agrawal : Some Problems of Indian Population P.P -24
8 Dr. Verma : Economic Planning & Development, P-27
9 Sharma & Vashney : Economic Growth and Planning, P-145
10 Dr. Bharti Pandey (1989) : Indian Economic Since Independence, P – 111